REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY - 2018

संजीव का उपन्यास 'सूत्रधार' :दलित समाज का यथार्थ

डॉ. दविंदर कौर
सहायक प्रोफेसर , हिन्दी विभाग , गुरू नानक कॉलेज, मोगा , पंजाब.

प्रस्तावना :

आजकल दलित शब्द को लेकर साहित्य के क्षेत्र में काफी चर्चा चल रही है। भारतीय समाज के अंतर्गत 'दलित' शब्द अपने आप में एक ऐसे समाज का द्योतक बन गया है जो शोषण की चक्की में निरंतर पिस रहा है। इस शब्द की उपज आधुनिक होने पर भी इसमें प्राचीनता के अवशेष दृष्टिगोचर होते हैं। जैसे ही हम दलित शब्द की सही पहचान हेतु उसमें सेंध लगाते हैं तो भारतीय समाज का एक ऐसा समूह जो सदियों से शोषण का शिकार होकर जीवनयापन को विवश है। हमारे सामने अपना अस्तित्व लिये खड़ा हो जाता है। यह हमारे प्राचीन भारत से लेकर आधुनिक भारत तक की वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था ,जाति– उपजाति आदि जैसी कई भयावह सच्चाइयों से परिचत करवाता है। 'दलित' शब्द का कोशगत अर्थ इस प्रकार है:

हिन्दी शब्द सागर मे 'दलित' को पीड़ा हुआ, टुकड़े –टुकड़े किया हुआ आदि से परिभाषित किया गया है।[1]

बृहत हिन्दी कोश में 'दलित' का अर्थ दबाया हुआ , हिन्दुओं में वे शूद्र जिन्हें अन्य जातियों के समान अधिकार नही हैं आदि दिया गया है।[2]

अतः दलित का सामाजिक सन्दर्भ में अर्थ है उच्च जातियों द्वारा जिस जाति को अस्पृश्य मानकर समाज से बहिष्कृत किया गया वह दलित है। 'दलित' संज्ञा के बारे में संकुचित या सीमित अर्थ की दृष्टि से सोचने वालों का कहना है कि अस्पृश्य या हरिजन आदिवासी ही दलित हैं जिन्हें युगों से उच्च वर्ग ने पैरों तले कुचला है। दलित शब्द व्यापक रूप में पीड़ित एवं शोषित के अर्थ में आता है जिनकी कोई विशेष जाति नही होती। वे जाति को महत्व न देकर मनुष्य की दुराव्यस्था तथा उसकी लाचारी और शोषण को महत्व दिया जाता है। इस व्यापक अर्थ में केवल गरीब और अनुसूचित जातियाँ , अनुसूचित जमातें ही दलित नही है , परन्तु इनकी भांति दयनीय और कष्टमय जीवन बिताने वाले सभी मजदूर किसान नौकर नारियां बेघर इत्यादि जैसे सभी लोग जो आर्थिक अभाव के कारण मनुष्य की तरह सम्मान से जी नही सकते वे सभी दलित हैं।[3] परन्तु भारतीय समाज व्यवस्था में 'दलित' शब्द शूद्र माने जाने गये वर्णों एवं निमन जाति के लोगों के लिये प्रचलित हुआ है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि दलित वह है जो दबाया गया है तथा आगे बढ़ने न दिया गया हो। हमारे देश का एक बहुत बड़ा वर्ग दलित है। जो रूढ़िवादिता के शिकंजे में हमेशा उलझा रहा है जिसका मुख्य कारण सामाजिक विसंगतियाँ और असमानताएँ हैं।

संजीव उन समकालीन रचनाकारो में से हैं जिन्होंने समाज की इस दुखती नब्ज को पहचानने का सफल प्रयास किया है। संजीव ने अपने उपन्यास 'सूत्रधार' दलित समाज को पूरी तरह से विश्लेषित किया है। उन्होंने इस उपन्यास के माध्यम से व्याप्त जातीय समस्या एवं वर्ण व्यवस्था को पूरी तरह से व्याख्यायित कर दिया है।

1. सामाजिक शोषण के शिकार

दलित समाज के लोग शुरू से ही सामाजिक शोषण के शिकार रहे हैं क्योंकि समाज में इन्हें बहुत ही नीचा स्थान प्राप्त है जिस कारण इन अनुसूचित जातियों को विभिन्न प्रकार के सामाजिक शोषण और अत्याचारों को सहना पड़ता है। निमन जाति के कारण उच्च जाति के लोग इन्हें शुरू से ही अपने साथ उठने बैठने खाने पीने रहने बातचीत करने उत्सवों में भाग लेने बराबरी के स्तर पर आचरण करने आदि पर प्रतिबंध लगाते रहे हैं। उनके लिये ऊँची जातियों के समक्ष सम्मान दिखाना अनिवार्य था।[4] भारतीय समाज में निमन जाति के लोगों को वह सम्मान नहीं दिया जाता जो एक व्यक्ति को मिलना चाहिए। उच्च जाति का अगर कोई व्यक्ति प्रसिद्ध कलाकार बनता है तो लोग उसकी प्रशंसा में उसे सम्मान देते हैं परन्तु एक दलित को वह सम्मान हासिल करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

विवेच्य उपन्यास में भिखारी को जब एक सभा में आने का आमंत्रण दिया जाता है तो उसे लगता है कि लोग उसके नाटकों के विषयों की चर्चा करेंगे परन्तु ऐसा कुछ नही होता कारण उसकी निमन जाति।"क्या कहने आए थे वे और कहाँ अटककर रह गए।उन्हें अचरज हुआ यहाँ किसी भी 'बेटी वियोग' या 'बहरा बहार' की चर्चा न की। बात राजों रजवाड़ों कांग्रेस और ऊँची जाति के नामी वीर पुरूषों तक महदूद रही। इस गौरवशाली परम्परा में खुद को कहीं से भी जोड़ नही पा रहे थे भिखारी। उनके मन में एक सवाल उठ रहा था," इसमें नाई कहाँ है, नाई की बात तो दूर दूसरी नान्ह जाति के लोग ही कहाँ हैं?"[5] इस तरह हम देखते हैं कि भिखाही ठाकुर को एक बहुत बड़ा कलाकार बनने के बाद भी समाज में वह स्थान प्राप्त नही हुआ जो एक ऊँची जाति वाले व्यक्ति को प्राप्त होता है। निमन जाति के लोगों के बारे में कोई नही सोचता ऊँची जाति के लोग बस अपनी ही बातें करते रहते है " विद्वानों के संग साथ से पता चल गया कि सी वाह वाही के बल पर खुद को तीसमार खाँ समझने की भूल मत करो।ज्ञान का कितना बड़ा समुन्दर पड़ा है और कितना कम जानते हो तुम! विद्या से हीन , जाति से हीन , धन दौलत से हीन। उन्हें लगा उनके लिए सारे रास्ते बंद हैं जिस पत्थर पर पाँव रखते हैं, वही डूब जाता है। बहाने जो भी बना लिए जायँ,बड़ी जातियों और विद्वानों के समाज में तुम आज भी वही हो भिखारी नाई वहाँ रंडियों के कोठे वाले मिसिर जी तो स्वीकार्य हैं मगर तुम नही हो , अपनी तमाम भक्ति और सदिच्छा के बावजूद।"[6]

इस तरह भारतीय समाज में दलितों की स्थिति दयनीय और विकट बनी हुई है। निवास स्थान से लेकर खाने पीने तक ,जीवन निर्वाह हेतु कार्य करने की स्थितियों तक किसी न किसी रुप में दलित समाज की उन दयनीय स्थिति को रेखांकित किया गया है जो मानवता की हँसी उड़ाती दृष्टव्य है "कुतुबपुर में सिर्फ एक कुआँ था पंडित जी का। तह दर तह वर्ण व्यवस्था यहाँ भी लागू थी पहले बाबा जी लोग पानी भरते , फिर बाबू साहब लोग , फिर वे जातियाँ जिनका छुआ चलता, तब बारी आती कोमीनों की। उनकी घर की औरतें गगरा गगरी लेकर बैठी रहती। जरूरतमंद चिरौरी गिनती कर किसी से मांग लेते"[7] विवेच्य उपन्यास में दलित समाज सवर्ण समाज की वर्ण व्यवस्था एवं जातिवाद की चक्की के पाटों मे पिस रहा है। इसी कारण दलित को पानी तक के लिए तरसना पड़ता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि दलित समाज की स्थिति कितनी बनी हुई है। उन्हें अछूत , तुच्छ मानने से उनका सामाजिक जीवन अपमान , उपेक्षा तथा दलन में बीतता है। निम्न जाति के कारण ही इनका निरंतर शोषण हो रहा है क्योंकि अपनी उपन्यास में भिखारी ठाकुर के माध्यम से दिखाया है।

2 जाति व्यवस्था

वैदिक काल से आज तक वर्ण एवं अवर्ण का युद्ध चालू है। "वैदिक काल में जाति पाति नहीं बल्कि वर्ण व्यवस्था थी और इस व्यवस्था में गुण कर्म के आधार पर वर्ण बदला जा ।सकता था किन्तु पिछले दो हजार वर्षों से इसे जन्मना कर दिया अर्थात् जो जिस जाति में जन्म लेगा आजीवन उसी में रहना होगा । स्थिति इतनी भयंकर हो गई कि धर्म तो बदला जा सकता है किन्तु जाति नही। भारत की इस समाज व्यवस्था में मानवता नाम की कोई चीज़ नही थी क्योंकि एक तरफ कथित सवर्ण वर्ग श्रमयुक्त होकर सारे अधिकार एवं सुख सुविधाओं का भोग कर रहा था तो दूसरी तरफ कथित शूद्र वर्ग कठोर शारीरिक श्रम करके भी दाल रोटी के लिये मोहताज था।"[8] संजीव का उपन्यास 'सूत्रधार' पूर्णतः जातिवाद व दलित समाज पर आधारित है। विवेच्य उपन्यास भारतीय जाति व्यवस्था की कटु और निर्मम आलोचना है। इसी जाति व्यवस्था के कारण चाहे

छोटी जाति वाला व्यक्ति कितना ही बड़ा कलाकार बन जाए लेकिन बड़ी जाति वाले व्यक्ति उन्हें वही काम करने के लिए विवश करते हैं जो वह नही चाहता। "भिखारी ! ए भिखारी ! कौनो बाड़न सन रे ? " अरे बाप, ई दू आदमी तो वह आदमी नही है। देखा तो पदारथ सिंह और मुंशी जी। प्रणाम करते हुए भिखारी ने खटिया निकाली । "बइठेंगे नही । तनी दाढ़ी छील द अ जल्दी से ।" भौचक रह गए भिखारी ! पहले लगा मजाक कर रहे हैं पदारथ सिंह लेकिन जब उसने दोबारा छूरा बड़ी जाति के बच्चे उन पर फिकरे कसते हैं " नउवा !" " नउवा ? ई हो पढ़ेगा ? पढ़ लिख गुरु जी को भी लगता है कि मुफत का टहलुआ मिल गया ," तनी टीप दे तो।' वे बाँह या टाँग पसार देते।"[9] इस तरह मास्टर तक उसकी जाति का अपमान करते हैं और उनसे बेगार करवाते हैं जिस कारण दलितों के बच्चे स्कूलों तक में पढ़ाई ठीक ढंग से नही कर पाते।

कह सकते हैं कि उच्च वर्गीय समाज की जातिवादी मानसिकता के कारण दलित समाज आगे नही बढ़ पा रहा है। उनसे जाति के नाम पर भेदभाव किया जाता है तथा स्कूलों में निम्न जाति के बच्चों को पढ़ाने की जगह उनसे काम लिया जाता है।

3 अस्पृश्यता की समस्या

अस्पृश्यता अनुसूचित जातियों की सामाजिक समस्या एवं शोषण का ज्वलंत उदाहरण है। जाति व्यवस्था में सामाजिक दूरी और पवित्रता पर विशेष जोर दिया जाता है। "जाति जितनी ऊँची होती है उसके अपवित्र होने की संभावना उतनी ही अधिक होती है। इसी भावना ने जाति व्यवस्था में अस्पृश्यता को जन्म दिया।"[10] इसी अस्पृश्यता के कारण ऊँचीके लोग निम्न जाति के लोगों से दूर रहते हैं वह उनकी किसी भी वस्तु को नही छूते। यहां तक कि यज्ञ आदि करते समय ब्राह्मण लोग दलितों को यज्ञशाला से दूर रहने को कहते हैं अगर गलती से कोई दलित उनके समीप आ जाए तो वह दोबारा स्नान करके अपना कार्य प्रारम्भ करते हैं। उपन्यास ' सूत्रधार' में भिखारी ठाकुर के सुन्दर व्यक्तित्व को देखकर किसी पुरोहित ने उसे ब्राह्मण समझ कर यज्ञशाला का काम सौंप दिया "थोड़ी ही देर में एक और '— अ?" " आपको ब्रह्मण नही भेटाया जो नाई के लड़के से जग्गशाला भरस्ट करवा रहे हैं"[11] उक्त कथन से यहां ब्राह्मणवादी सोच को व्यक्त किया गया है कि ये लोग निम्न जाति के लोगों से कितनी नफरत करते हैं तथा इन्हें अपवित्र मानते हैं। हिन्दू समाज में दलितों के लिए निम्न जाति का होना ऐसा अभिशाप बन गया जिसमें उन्हें मनुष्य होते हुए भी पशुओं से हीन अवस्था में जीवन निर्वाह को विवश किया गया। अस्पृश्यता के कोढ़ से घिरा यह दलित वर्ग मनुष्य होने के संज्ञा से भी तिरस्कृत होता गया। इस वर्ग का स्पर्श निषेध कर इन्हें सामाजिक पायदान पर सबसे निम्न बना दिया गया और सदियों से केवल सेवा भाव तक ही सीमित रखा। यज्ञशाला में काम करते भिखारी ठाकुर को पंडित जी कहते हैं" ई नाऊ है?" तब का !" " जावो बच्चा दूसरा काम देखो। एक बात सुन लो , जात मत छिपाना , पाप लगेगा। " भिखारी के हाथ पाँव सुन्न। जैसे कोई चूक हो गई हो।"[12]

इस तरह अस्पृश्यता का प्रमुख कारण जाति व्यवस्था तथा धार्मिक अंध श्रद्धा है। अंध श्रद्धा के जरिए पाप पुण्य की आड़ में दलितों का धार्मिक तथा आर्थिक शोषण सवर्णों द्वारा किया जाता है। भिखारी के यज्ञशाला में जाने से यज्ञशाला भ्रष्ट होती है " उसके सामने ही गंगाजल का छिड़काव कर मंत्र से शुद्ध करने के बाद काम फिर शुरु किया गया। "[13] इससे पता चलता है कि घृणित समाज में लोग अपने आप को पवित्र और ऊँचा सिद्ध करने के लिए निम्न वर्ग को अस्पृश्य कहते है, उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है जिससे निम्न जिस जाति के लोगों को मानसिक पीड़ा होती है। ऐसे लोगों के बारे में भिखारी सोचता है कि " गंगाजल नाई या कहार ढोकर ले आए थे , लकड़ी लोहार फाड़ रहा था। दूध दहीं अहीर के घर से आया होगा , कलशा परई कुम्हार दे गया होगा , कपड़े और दूसरी चीज़े को भी ब्राह्मणों ने नही बनाया होगा। मगर ये सारे लोग अब इन्हें छू भी नहीं सकते।"[14] लेखक द्वारा यह व्यंग्य भारतीय समाज पर है कि जो चीज़ें जिन लोगों ने बनाईं वह ही उन्हें छू नही सकते छूने से अपवित्र हो जाती हैं।

कहा जा सकता है कि जाति व्यवस्था के परिणामस्वरूप अस्पृश्यता की समस्या पैदा हुई जिस कारण दलितों के साथ सवर्णों द्वारा अमानवीय व्यवहार किया गया। निम्न जाति के लोग अपनी पूरी जिंदगी इन की सेवा करने में व्यतीत करते हैं परन्तु फिर भी सवर्णों की स्वार्थप्रवृति के कारण दलित अपमानित जिंदगी जीता रहा है।

4 आर्थिक शोषण

बीसवीं शताब्दी के दूसरे तीसरे और चोथे दशक में छूत—अछूत के मुद्दे पर जिस गहरी संवेदनशीलता से प्रेमचन्द ने लिखा , किसी और ने नही। " प्रेमचन्द हिन्दू सामाज की इस विडम्बना से बहुत आहत थे कि यह समाज जिसे अपना भाई कहता है , उसी के साथ ऐसा दुव्यवहार करता है कि मनुष्यता सिहर उठती है। प्रेमचन्द अच्छी तरह जानते थे कि हमारे समाज में तथाकथित सवर्ण समाज में ऐसे लोग भरे पड़े हैं जो दलितों के रहन सहन , उनकी अशिक्षा आदि को बीच में लाकर उनके विकास का मार्ग अवरूद्ध करने की जाएंगे तो उनकी बेगार कौन करेगा। कौन उनकी जी हजूरी करेगा। किसका शोषण करके वे अपने बड़प्पन की भूख को शांत करेंगे"[15]

संजीव के उपन्यास ' सूत्रधार ' में भी दलितों के साथ हो रहे इसी आर्थिक शोषण को दिखाया गया है। विवेच्य उपन्यास में दलितों को अछूत तथा तुच्छ माना जाता है जिस कारण वे केवल निम्नस्तर का कामकाज करके ही जीविकापार्जन कर सकता है। नाई, धोबी,चमार आदि निम्न जाति के लोग काम के बदले उपज का कुछ अंश तथा मांगलिक अवसरों पर ईनाम लेकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। भिखारी गांव में नाई का काम करता है परन्तु फिर भी उसकी आर्थिक स्थिति सुधर नही पाती जिससे तंग आए उसके पिता का कहना है कि " महंगाई कितनी बढ़ गई है। परदेश में एक दाढ़ी का एक अधेला मिल जाता है लेकिन हियाँ तो साल भर जोहों और मिलेगा"[16]

हम देखते हैं कि देहातों में नाई, चमार आदि निम्न जाति के लोगों को नकद मज़दूरी की जगह अन्य तरह से मज़दूरी स्वीकार करने के लिए भी विवश किया जाता है। भिखारी ठाकुर ने शोषण पर आधारित इस समाज की खूब खिल्ली उड़ाई है। उन्होंने खास तौर पर ब्राह्मण पर ज्यादा चोट की है। " बच्चे से सउरी में जनमते ही सुधि आती है नाई की कि आओ, नौ महीने का पाप लेकर बच्चे और बच्चे की माई को पवित्र करो। नेग ? बबुआ हुआ तो चार आना और बबुनी हुई तो दो आना। सउरी के काम नह काटने, नहावन कराने तक काम ही काम है नाई नाइन के जबकि पंडित बैठे बैठे जन्म कुंडली और पतरा देखकर बाईस रूपए ऐंठता है।"[17] इस कथन से पूरी तरह स्पष्ट होता है कि निम्न जाति के लोग आर्थिक शोषण का शिकार रहे हैं उन्हें गंदे और कठिन शारीरिक श्रम वाले कामों पर तो लगाया ही जाता है साथ ही उन्हें इन कामों के लिए मज़दूरी भी कम दी जाती है जो ज्यादा मेहनत मज़दूरी वाला काम करता है उसे सिर्फ एक या दो आना ही मिलता है और ब्राह्मण वर्ग बिना कोई काम किए ही उनसे ज्यादा कमा लेता है।

अत : कहना सही होगा कि दलित समाज की आर्थिक स्थिति अभावग्रस्त है। रोज़ी—रोटी का उचित प्रबंध न होने से उनकी जिंदगी गरीबी , मज़दूरी तथा सवर्णों की कूटनीति से जूझती है।

5 दलित नारी की स्थिति

डॉ.नगमा जावेद की टिप्पणी दलित नारी की स्थिति को पूरी तरह से व्याख्यायित करती है कि " भारतीय समाज में यूं तो नारी हमेशा से दलित रही है और फिर दलित नारी का तो कहना ही क्या ? उसे तो सामंती मानसिकता के लोग अपनी संपत्ति समझते आए हैं।"[18] विशेषतः पिछड़े गांवों में दलित नारी की इज्जत से खेलना आम बात है। दलित नारी को केवल एक वस्तु समझा जाता है। जिसके साथ जैसा चाहा वैसा व्यवहार किया यहां तक कि बेच दिया अथवा जुए में हार दिया जाता है। विवेच्य उपन्यास में भिखारी ठाकुर ने अपने नाटकों के माधयम से नारी की दयनीय दशा को मार्मिकता से नाच में प्रस्तुत करते हैं " एक बबुनी , दूसरी बबुनी , तीसरी बबुनी , बेटियों का अनन्त क्रम ! वैर बहुटियों सी रेंग रही हैं बेटियाँ , मय बिहार , यू.पी, बंगाल में बेची जा रही हैं बेटियाँ खूसट बूढ़ों के हाथ । हलाल की जा रही हैं बेटियाँ और उनकी रुलाई को मंतर और गीत और गारी और चुहुल से ढँका जा रहा है "[19] इस प्रकार भिखारी ने अपनी कला के जरिए बेटी बेचना तथा अनमेल विवाह पात्र है जिसने अपनी कला का प्रदर्शन सिर्फ धन कमाने तक सीमित नही रखा बल्कि उन्होंने लोगों को जागरूक भी किया " भिखारी ने 'तमाशा' का जादू हर किसी के सिर पर चढ़कर बोल रहा था। उड़ी पड़ी खबरें आ रही थीं कि अलाने गाँव में लड़की बूढ़ा वर देखकर मंडप से ही भाग गई। नीतनवाँ गाँव में तो प्रौढ़ वर देखकर गाँव के लोगों ने ही बरात वापस कर दी।"[20]

परिणामस्वरूप हम देखते हैं कि उनके नाच को देखकर लड़कियां बूढ़े दुल्हे से शादी करने से इन्कार कर देती हैं और पिता बूढ़े दुल्हे से शादी न करने की कसम खाते हैं। जिस समय समाज में सभी जगह पर

सत्य हरिश्चन्द्र , भक्त प्रह्लाद इत्यादि नाटक खेले जा रहे थे उस समय में लोक से हटकर भिखारी ठाकुर की नजर स्त्री शोषण एवं स्त्री पीड़ा की ओर गई।

हम कह सकते हैं कि दलित नारी का शुरु से ही शोषण होता आ रहा है। समाज में उसे पुरुष से निम्न दर्जा प्राप्त है। दलित नारी की इच्छा के विरूद्ध उसके साथ व्यवहार किया जाता है परन्तु इसके साथ साथ दलित नारी में अपने ऊपर हो रहे अत्याचार व शोषण के प्रति जागरूकता आ रही है इसी चेतनता के कारण उसने शोषण के विरूद्ध आवाज उठानी आरम्भ कर दी है।

6 अंधविश्वास

गैर दलितों ने प्राचीनकाल से ही दलितों को शिक्षा से वंचित रखने का जो षड्यंत्र रचा इस मुश्किल कार्य न था। धर्म का प्रभाव हर समाज पर होता है। आज विज्ञान के युग में दलित समाज में धर्मांधता के कारण अंधविश्वास मंत्र तंत्र, मनौती मनाना पाप पुण्य आदि का प्रचलन परिलक्षित होता है दलित समाज यहां पुनर्जन्म, अंधविश्वास जैसी बातों को न नाई दलसिंगार ठाकुर के घर में पैदा होने के पीछे कारण पाप ही मानते हैं " पिछले जन्म में जरूर ऐसा कोई काम किया होगा कि इस जन्म में नाई के घर पैदा हुए और ये, जो बड़ जात में जन्में हैं, उन्होंने कोई बड़े पुन्न का काम किया होगा।"[21] समाज में लोगों का विश्वास है कि पिछले जन्मों का फल ही मनुष्य को अगले जन्म में मिलता है। इस अज्ञानता का प्रमुख कारण लोगों में शिक्षा का अभाव है। उपन्यास में धनी सिंह की मृत्यु का कारण भी उसकी पत्नी का सराप और देवताओं का परकोप माना गया है " धनी सिंह मू गए ! रात तक तो ठीक थे, सुबह उल्टी दस्त हुई और चल बसे ! गजाधर सिंह के घर से रूलाई की आवाजें मातम को गाढ़ा कर रही है। पच्चास तरह की कानाफूसियाँ चमयन रख ली थी न सो सती मेहरारू का सराप लगा... नही , असिल में ई 'महावीर जी का परकोप' है , रामलीला में हनुमान जी का पाट पूरा किए बिना ही चले आए थे।"[22] इस तरह हम देखते हैं कि लोग उसकी मृत्यु का कारण पाप और सराप को मानते हैं न कि डाक्टरी ईलाज के आभाव को। यदि धनी सिंह को उचित समय पर डाक्टर के पास ले जाया जाता तो वह बच भी सकता था परन्तु लोगों में ऐसा सोचनेवाला कोई नही था इन्हीं अंधविश्वासों अथवा अशिक्षा के अभाव कारण धनी सिंह की मृत्यु हो जाती है। कह सकते हैं कि संजीव ने अपने उपन्यास 'सूत्रधार' में ऐसे अनेक प्रसंगों के द्वारा अंधविश्वास , अज्ञानता और धर्म के खोखलेपन की तस्वीर प्रस्तुत की है।

निष्कर्षतः

कहा जा सकता है कि दलित वह है जिसका दलन एवं शोषण किया गया है। भारतीय समाज व्यवस्था के अंतर्गत जिन्हें अस्पृश्य माना गया है वे सभी दलित है। संजीव ने उपन्यास ' सूत्रधार' में दलित समाज की अनेक समस्याओं को उजागर किया है। विवेच्य उपन्यास में जाति समस्या, अस्पृश्यता की समस्या तथा आर्थिक शोषण जैसी सभी समस्याओं के कारण और समाज पर पड़ रहे उसके प्रभाव को व्यकत किया है। हमारे भारतीय समाज की यह विडम्बना रही है कि जो वर्ण व्यवस्था लोगों की सुविधा के लिए बनाई गई थी उसे ही स्वार्थी लोगों ने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए जाति में परिवर्तित कर दिया। जिस कारण निम्न जातियों पर अत्याचारों एवं शोषण का सिलसिला आरम्भ हुआ। आर्थिक शोषण के कारण निम्न जाति के लोग अपना जीवन यापन अच्छे ढंग से नही कर पाते तथा अस्पृश्यता की समस्या उन्हें मानसिक पीड़ा देती है। इस तरह दलित जीवन के सामाजिक , धार्मिक , आर्थिक पक्ष शोषण के ऐसे जाल में जकड़े गए हैं जिसे तोड़ पाना यदि असंभव नही तो आसान भी नही हैं परन्तु उसे तोड़ने का कार्य निरंतर जारी है।

पाद टिप्पणी

1. श्यामसुन्दर दास (संपा.) , **हिन्दी शब्द सागर , खण्ड—4**, पृ— 2226
2. कालिका प्रसाद (संपा.) , **बृहत हिन्दी कोश** , पृ—510
3. बलवंत साधू जादव , **प्रेमचन्द साहित्य में दलित चेतना** , पृ—22
4. मुकेश भूषण , **दलितों का इतिहास : अतीत एवं वर्तमान के आइने में** , पृ—126
5. संजीव , **सूत्रधार** , पृ—127
6. वही , पृ—134
7. वही , पृ—236
8. राम शिव मूर्ति यादव , भारतीय समाज व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु है जातिवाद (आलेख) , **हाशिए की आवाज ,** जनवरी 2014, पृ—19—20
9. संजीव , **सूत्रधार** , पृ—185
10. मुकेश भूषण , **दलितों का इतिहास : अतीत एवं वर्तमान के आइने में** , पृ—126
11. संजीव , **सूत्रधार** , पृ—22
12. वही , पृ—22
13. वही , पृ—22
14. वही , पृ—22
15. सदानन्द शाही (संपा.) , **दलित साहित्य की अवधारणा और प्रेमचन्द** , पृ—115—116
16. संजीव , **सूत्रधार** , पृ—24
17. वही , पृ—161
18. उद्धृत, शहाजहान मणेर , **सामाजिक यथार्थ और कथाकार संजीव** , पृ—77
19. संजीव , **सूत्रधार** , पृ—102
20. वही , पृ—125
21. वही , पृ—157
22. वही , पृ— 53—54

डॉ. दविंदर कौर
सहायक प्रोफेसर , हिन्दी विभाग , गुरू नानक कॉलेज, मोगा , पंजाब.